

जो तुमको नहीं जाने जिनेश, वे पायें भव-भव-भ्रमण क्लेश ।
 वे माँगें तुमसे धन-समाज, वैभव पुत्रादिक राज-काज ॥
 जिनको तुम त्यागे तुच्छ जान, वे उन्हें मानते हैं महान ।
 उनमें ही निशदिन रहें लीन, वे पुण्य-पाप में ही प्रवीन ॥
 प्रभु पुण्य-पाप से पार आप, बिन पहिचाने पायें संताप ।
 संतापहरण सुखकरण सार, शुद्धात्मस्वरूपी समयसार ॥
 तुम समयसार हम समयसार, सम्पूर्ण आत्मा समयसार ।
 जो पहचानें अपना स्वरूप, वे हो जायें परमात्मरूप ॥
 उनको ना कोई रहे चाह, वे अपना लेवें मोक्ष राह ।
 वे करें आत्मा को प्रसिद्ध, वे अल्पकाल में होंय सिद्ध ॥
 ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(दोहा)

भूतकाल प्रभु आपका, वह मेरा वर्तमान ।
 वर्तमान जो आपका, वह भविष्य मम जान ॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

भजन

जिन-प्रतिमा जिनवर-सी कहिए ।

भविक तुम वन्दहु मनधर भाव, जिन-प्रतिमा जिनवर-सी कहिए ।
 जाके दरस परम पद प्रापति, अरु अनंत शिव-सुख लहिए ॥जिन.॥
 निज-स्वभाव निरमल है निरखत, करम सकल अरि घट दहिये ।
 सिद्ध-समान प्रकट इह थानक, निरख-निरख छवि उर गहिए ॥जिन.॥
 अष्ट कर्म-दल भंज प्रकट भई, चिन्मूरति मनु बन रहिये ।
 जाके दरस परम पद प्रापति, अरु अनंत शिव-सुख लहिए ॥जिन.॥
 त्रिभुवन माहिं अकृत्रिम-कृत्रिम, वंदन नित-प्रति निरवहिये ।
 महा-पुण्य संयोग मिलत है, 'भैया' जिन प्रतिमा सरदहिये ॥जिन.॥